

पद ४९

(राग: अरभी - ताल: धुमळी)

कमलेशवर प्रिय हो हे मानस। कमल करस्थित हो हे मानस।
सहस्रदल चित्कमली जो शिव प्राण मदात्मा हो हे मानस। कमल
शिवालय हो हे मानस ॥१॥ षट्कमलीं विहरो हे मानस। प्रपंच
मद विसरो हे मानस। ब्रह्मकमल मकरंद सुधारस मधु सेवनीं रत
हो हे मानस। कमलपदीं नत हो हे मानस ॥२॥ कमलासनीं स्थिर
हो हे मानस। जन्म शिवार्चन हो हे मानस। सिंहनाद शिवगर्जनें
भ्रमगजगंड विदारण हो हे मानस। कमल शिवर्पण हो हे
मानस ॥३॥ वंशकमल विकसो हे मानस। शिवयश गानीं असो
हे मानस। शिवमार्तांड सदय हृत्कमली सफल हैं जीवन हो हे
मानस। सकल कमलरूप हो हे मानस ॥३॥